परमधर्मपीठीय अन्तरधार्मिक
सम्वाद परिषद

ख्रीस्तीय एवं जैनः
शांति के आधार भ्रातृत्व को प्रोत्साहित करें

महावीर जयन्ती सन्देश
2014

वाटिकन सिटी

प्रिय जैन मित्र,

1. 13 अप्रैल को आप "तीर्थंकर" (पथ खोजक) वर्द्धमान महावीर की जयंती मना रहे हैं। इस उपलक्ष्य में परमधर्मपीठीय अन्तरधार्मिक सम्वाद परिषद आपको शान्ति एवं कल्याण की हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करता है। महावीर जयंती का उत्सव, हमारे बीच विद्यमान भाईचारे और साहचर्य के बंधन को अधिकाधिक सुदृढ़ करे तथा आपके परिवारों एवं समुदायों में आनन्द की वृद्धि करे।

2. हमारी संजोई हुई प्रथा के अनुकूल, इस अवसर पर, हम, शांति की नींव, भ्रातृत्व पर कुछ चिन्तन आपके साथ बाँटना चाहते हैं। भ्रातृत्व पर जब हम चिन्तन करते हैं तब हमारे विचार, सर्वप्रथम, परिवार की संस्था के प्रति निर्देशित होते हैं। हम सब सहमत होंगे कि परिवार भ्रातृत्व की पहली पाठशाला है जहाँ, विभिन्न पीढ़ियों तथा भिन्न-भिन्न स्वभाव एवं दृष्टिकोण रखनेवाले उसके सदस्य, सबके कल्याण को सुनिश्चित्त करने के लिये परस्पर भागीदारी, सेवा एवं आत्म-त्याग के भाव में संपोषित होते हैं। परिवार में भ्रातृत्व की यह नींव, समाज में, और अधिक शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण जीवन यापन को सुसाध्य एवं अनुकूल बनाती है जिसके लिये समस्त विश्व के लोग आतुर रहा करते हैं। अनुभव हमें यह भी सिखाता है कि परिवार के अन्तर्गत, यथार्थ भ्रातृत्व का समेकन तदनुसार बहुलवादी समाज में जीवन यापन करनेवाले लोगों के बीच इसके विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। इस दृढ़धारणा पर सन्त पापा फ्राँसिस द्वारा उस समय स्पष्ट बल दिया गया जब उन्होंने कहा था कि परिवार "सभी भ्रातृपूर्ण सम्बन्धों को स्रोत है और इस प्रकार वह शान्ति की नींव एवं उसका पहला मार्ग है" (विश्व शांति दिवस 2014 के उपलक्ष्य में प्रकाशित सन्देश)।

3. प्रत्येक पीढ़ी, आयु एवं युग में, धार्मिक परम्पराएँ परिवार के भीतर तथा सुविस्तृत समाज में भ्रातृत्व के प्रसारक रूप में कार्य करने तथा उसे प्रोत्साहित करने के लिये बुलाई गई हैं। वर्तमान संदर्भ में, मानवता के कल्याण हेतु, धर्मों का परम दायित्व है कि वे भ्रातृत्व के आधार पर शांति की स्थापना करें। वस्तुतः, हमारे भूमण्डलीकृत विश्व में, नित्य बढ़ती व्यक्तिपरक, अहंकारपूर्ण और भौतिकवादी प्रवृत्तियों ने बड़ी मेहनत एवं बारीकी से बुने गये पारिवारिक एवं सामुदायिक सम्बन्धों को ही प्रभावित नहीं किया है बल्कि, जैसा कि कई मामलों में देखा गया, परिवारों और समुदायों को विभाजित और घायल भी कर दिया है।

4. ऐसी स्थिति में जब सभी की भलाई एवं सभी के विकास की संस्कृति पर व्यक्तिगत कल्याण की संस्कृति का ख़तरा बना है, हमारी समकालीन परिस्थिति ज़रूरतमन्द भाइयों एवं बहनों के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना और साथ ही विश्व भर में भ्रातृत्वपूर्ण सम्बन्धों का अभाव दर्ज़ कर रही है। हाल के वर्षों में, विशेष रूप से, धर्म के नाम पर भेदभाव, उत्पीड़न एवं हिंसा

में चौंकानेवाली वृद्धि, समय का एक संकेत है जो विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच सौहार्द्र और भाईचारे के बीज बोने के लिये हम सब का आह्वान करता है जिससे हम विश्व में शांति एवं मैत्री के फलों की फसल काट सकें जो हमारा एकमात्र एवं सामान्य निवास स्थान है।

5. सन्त पापा फ्राँसिस स्मरण दिलाते हैं कि "असमानता, ग़रीबी और अन्याय की कई स्थितियाँ केवल भाईचारे के गहन अभाव के संकेत नहीं हैं, अपितु ये एकात्मता की संस्कृति के दुरुपयोग के भी संकेत हैं, और इसके प्रकाश में, वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि "भाईचारे के बिना न्यायसंगत समाज तथा ठोस एवं स्थायी शांति का निर्माण करना असम्भव है" (विश्व शांति दिवस 2014 के उपलक्ष्य में प्रकाशित सन्देश)। वर्तमान स्थिति इसीलिए परिवारों एवं समुदायों दोनों में, भ्रातृत्वपूर्ण सम्बन्धों, ज़िम्मेदारी एवं सहयोग की पुनर्खोज एवं नवीकरण की मांग करती है जिससे भ्रातृत्वपूर्ण, न्यायसंगत एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की ठोस संरचना सम्भव हो सके।

6. अपने-अपने धर्मों में सुदृढ़ विश्वासियों के रूप में तथा आपस में अन्तर-सम्बन्धित एवं अन्तर-निर्भर होने का साझा धारणा रखनेवाले व्यक्तियों के नाते, हम ख्रीस्तीय एवं जैन, अपने सामाजिक सह-उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक रहते हुए, प्रत्येक स्थल पर, भ्रातृत्व को बढ़ावा देने के लिये, अन्य धर्मों के अनुयायियों तथा सभी शुभचिन्तकों के साथ हाथ मिला सकें।

आप सबको महावीर जयन्ती की हार्दिक शुभकामनाएँ!

Jean-Louis Card. Tauran

जाँ-लूई कार्डिनल तौराँ
अध्यक्ष

श्रद्धेय मिगेल आन्गेल अयुसो गिक्सो, एमसीसीजे
सचिव

PONTIFICAL COUNCIL FOR INTERRELIGIOUS DIALOGUE
00120 Vatican City

Tel: +39.06.6988 4321
Fax: +39.06.6988 4494

E-mail: dialogo@interrel.va
http://www.pcinterreligious.org/